पहेलियाँ

1

पुद्गल धर्म अधर्म तो देख वस्तु थक जाय।
आकाश नाप ना कर सके कालचक्र चकराय॥

2

एक योजन मेरा गला, पेट नाप है चार।
गहराई में आठ है, सुनकर करो विचार॥

3

एक फिल्म ऐसी चले, क्रमशः चौबीस बार॥
दृश्य वही बदले नहीं माँ से पूछ बताय॥

4

रहट पुराना ना नया, कब से थाह न पाय।
छह पलने ऊपर चढ़े, फिर नीचे को जाय॥

5

ऐसी क्या रचना करी, बन्धन में मुनिराज।
टूट टूट ताले गिरे, नृपति बुद्धि चकराय॥

6

तीन युद्ध विजयी हुए, प्यारे लाल सुनन्द।
तन पर बेलें चढ़ गयीं, उर आतम आनन्द॥

7

पुण्योदय का पार ना, पर ना कण की चाह।
अन्तर मुहूरत काल में, लोकालोक जनाय॥

8

तीर्थंकर खुद बन गये, तीर्थंकर के पौत्र।
चक्रवर्ती पद पा लिया, चक्रवर्ती के पुत्र॥ - कौन

9

अरे पुरुरवा क्या करे, तू आतम को भूल।
मांसादिक का त्याग कर, छोड़ों हिंसा मूल॥ - किसने कहा

10

सरिता तट तपसी खड़े, शुद्ध ज्ञान उपयोग।
मोह कर्म उर के भग्यो ले, केवल ज्ञान मनोज्ञ॥ - नदी का नाम

11

हाथ कटोरा ले खड़ी, किन्तु बँधे हैं पाँव।
महावीर आगे बढ़े, अँखियन जल भर जाय॥ - कौन

12

एक महापण्डित विलोक्यो मन थंभ जबै
चकित भयो खड़ो हो गयो खंभ सो
प्रभु की विलोकी मुद्रा उर भेद ज्ञान भयो
अन्तर मुहूर्त पाछी भाव लिंगी है
दिव्यध्वनि सुनी द्वादशांगी को उदय भयो
गणधर भयो कौन प्रथम नाम पायो है

13

एक महाविशाल मन्दिर बन्यो नगर में
प्रथम प्रभु पधारे भरत विदेह के
वासुपूज्य चन्द्रप्रभ वीर पदम पारस
लाखों नर नारी जहाँ आये हरषाय के
प्रवचन अमृत धारा तत्त्व की तरंग जहाँ
घर के उमंग हिये सुने भव्य अनि के

14

बिम्ब एक शत आठ है धनुष पंच शत काय।
तेरह में गुण चार कर अर्थ कहो बतलाय॥

15

सुने अचम्भा होत है करे वो कर्ता नाहीं।
ज्ञाता दृष्टा ही रहे अक्ष विषय है नाहीं॥

16

ज्ञानामृत निर्झर झरे, कलबल विषय कषाय।
भिन्न भिन्न दिखता रहे संयम नहीं कर पाय॥

17

गोले गोल असंख्य है चूड़ी के आकार।
आदि में बू है अन्त में भू है केवली को साकार॥

18

प्रथम मिटे तो भाव है अन्त मिटे तो पंच।
द्रव्य एक धारण करे जो सबका सरपंच ॥

19

सदा रहे आनन्द में भोग अनन्तानन्त।
एक एक कैसे गिनूँ ऐसे जीव अनन्त ॥

20

चतुर्मुखी के भवन में भवने योग्य ही आय।
यत्र तत्र अन्यत्र फिरे ऐसे कौन बताय ॥

21

स्वर्ग में देवी संग रमें नरक सहे घनघात।
दोऊ परिणति से हटे डटे आप में आप ॥

22

जग में ऐसे स्थान दो हमें बताओ सन्त।
एक घटे ना एक बढ़े कहते श्री अरिहन्त ॥

23

अकृत्रिम ऐसा डिब्बा नहीं खुले कोई दरवाजा
अनादि सर्वज्ञों ने देखा इसमें बैठे छह बाबा।

24

महामण्डलेश्वर राज शिरोमणि नीतिज्ञ सम्यक् ज्ञानी है।
कोटि भट्ट कहलाते राजा कहलाते फिर भी निर अभिमानी है ॥

25

सीधी अनुश्रेणी चढ़ जाता, तोड़ गया तिर्यक् से नाता।
द्रव्य भाव और नो कर्मों की धूल उड़ा निज पद दर्शाता ॥

26

सहस्र नाम तो इन्द्र पुकारे गणधर गुण गा-गाकर हारे।
ऐसे जीव भी हुए अनन्त, अरे बताओ ओ गुणवन्त ॥

27

चौबीस के दूने सब खुल जाते, भक्त अमर सब होकर गाते।
पुण्य बँधे पापों का नाश, पाठ करो कर के विश्वास ॥

28

हाथी घोड़े सेना वैभव, राजरानियाँ अपरम्पार।
अपने में रह कर जो भोगे कौन कहो गम्भीर उदार ॥

29

जलदेवों ने एक दुष्ट को पकड़ जकड़ कर बाँध दिया।
शीलवती वह 'रैयना' पूछे क्या तुमने पहचान लिया ॥

30

दो हजार वर्ष पहले कौन महर्षि आया था।
श्रुत स्कन्ध दूजे की रचना करके जो हरषाया था॥

31

अनबद्ध स्पृष्ट अनन्य नियत और जो अविशेषे से।
असंयुक्त जो देख ओ! भैया कौन नय कहते उसे॥

32

सराग संयम संयम असंयम अकाम निर्जर बाल तप।
देता करम वह कौन आयु न्याय से बतला सतत॥

33

शब्दार्थ आगम अर्थ अरु मत अर्थ नय भावार्थ ये।
आवे अरे क्या काम श्रोता दो सही उत्तर मुझे॥

34

रोके रखे जो जीव को विधि कही पाँच प्रकार है।
होने न दे कुछ लाभ उसको कर्म नाम बता अरे॥

35

सुख दुःख बैरी बन्धु बीच हो, समता रस ही पीता हो।
हिरन खाज खुजावे फिर भी अचल उपल सम रहता हो॥

36

सब मन्त्रों में एक मन्त्र जो निज पद को दर्शाता है।
सर्व अमंगल छूमन्तर कर मुक्ति वधू दिलवाता है॥

37

सात तत्त्व और नौ पदार्थ में रह कर भी नहीं रहता है।
अनादि निधन वह स्वयंसिद्ध जो नित्य प्रकाशित रहता है॥

38

दो कदमों से नापा जिसने सारा मानुषोत्तर द्वीप।
रखा तीसरा कदम पीठ पर थरथर काँपे अधमी नीच॥

39

वस्तु अनेकों भाव बदलती रहती प्रति समय तैयार।
हमें जीव के भाव बताओ जो होते हैं पाँच प्रकार॥

40

आदि अन्त में ऐत है मध्य विराजे राव।
बाल सूर्य को ले चले श्वेत चन्द्र इतराय॥

41

अठ दश अरि को मार कर त्रेसठ दिये पछाड़।
चार चोर हत कर दिये चार मिले हैं आन॥

42

काम देव सा रूप है पूछ दूर तक जाय।
अंजन वायु सुत कहो पदम दूत कहलाय॥

43

दीक्षा ले वन वन फिरे स्वानुभूति फल खाय।
मुख वाचा बोले नहीं कुल कर नन्द कहाय॥

44

गुलदस्ता फूलों भरा उभरे रंग है तीन।
तीन गिन और कौन है जिससे वह संगीन॥

45

पहली मे तो तीस है, दूजी में पचीस।
पन्द्रह दस त्रय पंच कटे एक लाख क्रम से उपदिष्ट॥

46

पाँच सुभट बलवान् है डाले साँकल पाँव।
चिदानन्द को पीठ दे उल्टी चाल चलाय॥

47

शुद्धातम साधन करे रहे आत्म लवलीन।
दीक्षा दे उपदेश दे सुन सुन होय प्रवीण॥

48

समवशरण लक्ष्मी सकल, निकल लोक के अन्त।
नाम बताओ कौन वे उत्तम हैं गुणवन्त॥

49

श्रुत सरवर में गोते खाते, निर्मल हंस कहाते हैं।
जिनध्वनि में से चुगते मोती, औरों को चुगवाते हैं॥

50

परमेष्ठी पाँचों खड़े निज आतम भवहीन।
उत्तम मंगल कौन है निश्चय कहो प्रवीण॥

51

साठ महीनों में जो आता मधुवन मधुकर बन जाता।
तत्त्व ज्ञान की गूँज सुनाकर फिर अन्यत्र चला जाता॥

52

जैनों में जो युवा कहाता अध्यात्म की धूम मचाता है।
धुँधले नहीं है रेशे जिनके उच्च जैन कहलाता है॥

53

मुक्ति वधु जो दर्पण देखे वचन सुनावे अमृत जैसे।
रत्नत्रय का मुकुट सजाये भेद ज्ञान परिणति करवाये॥

54

विंशती कर गये गगन विहार और अनन्तों हो गये पार।
पार्श्व चन्द्र की दो मीनार कौन बताओ अर्थ विचार॥

55

श्रुत धारा निर्झर सहज कलश चार भरवाय।
ज्ञान नीर पीते सुजन परम्परा से आय॥

56

तीन शतक सत्तावन मोती हार पिरोये निरखो ज्योति।
मूरख हो वह पास न आये ज्ञानी जन को बहुत लुभावे॥

57

पाप पुण्य के जोर से प्राणी स्वर्ग नरक को जावे।
कौन बताओ काला कुबड़ा जो निगोद ले जावे॥

58

कौन रत्न ऐसा वह भाई सब गति में मिल जाता।
पुण्य पाप घनघोर उदय हो जगमग ज्योति जगाता॥

59

वर्ण गन्धमय रचना जिसकी रूप नजर ना आवे।
परद्रव्यों का भोग करे ना हाथ मले रह जावे॥

60

दो नामों के पीछे आता एक नाम पीछे की ओर।
भारत भूमि पावन करता मनीषियों का जो सिरमोर॥

61

प्रथम तत्त्व की बात बतावे दिल ही दिल में सबको भावे।
परम भाव का लाभ कराकर, सर से भव का बोझ उतारे॥

62

जम कर बैठा थाली जैसा तीन लोक का पेट हो ऐसा।
गर्भ विराजे तीर्थंकर है उनमें पहले सीमन्धर है॥

63

दस भागों में बँटा हुआ है जैनी जन का रटा हुआ है।
संस्कृत का यह पहला दौर करण शास्त्र का जो सिरमोर॥

64

सरवर जल कमलों से भरा जिसमें भव्य जिनालय खड़ा।
अन्तिम आवे जिनका नाम हाथ जोड़ कर करूँ प्रणाम॥

65

छह कमरों से सजा हुआ है छत पर शोभित सुन्दर ढाल।
सम्पत से कीमत नहीं होती सोचो करो जाँच पड़ताल॥

66

नौ दरवाजे भव्य बन गये, आगे बनता महल विशाल।
कारीगर वह कौन था, जिसके लिए प्राण तत्काल।।

67

पाँच खण्ड के महल में रमे नार रमणीय।
देखे जाने सुंधे सुने चखे हुए धर धीर।।

68

एक पेटी है महाविशाल जड़ चेतन रहते खुशहाल।
लोक लगे है सुन्दर बिन्दु पेटी कौन बताओ बन्धु।।

69

नीचे सात चोर हैं काले, ऊपर बैठे सुन्दर चाँद।
बीच सुरेन्दर द्वीप समन्दर बीच बनी है नदिया बाँध।।

70

दो नव अरु दस अष्ट है इक्कीस उदय विकार।
परिणाम त्रय विधि कहा उत्तर बुझो राय।।

71

सात शतक मुनि जय करे रहे अकम्प वन माँही।
कौन मुनि वामन भये घर वत्सल उर माहीं।।

72

शुद्धातम अमृत पीवे पत्र लिये हैं ताड़।
पैना काँटा हाथ ले लिख्यो जिनागम सार।।

73

पाँच महा मुनिवर खड़े शत्रुंजय के शीश।
कौन पधारे मुक्ति में कौन रहे जग बीच।।

74

अष्ट महाभाषा सहित लघु भाषा शत सात।
चार चतुष्टय मय रमें भव्य जीव के तात।।

75

गुण अनन्त जिसमें रहे पर पदार्थ है एक।
पर जाने पर ना ग्रहे रहे सदा एकत्व।।

76

दो दो देह धरे सदा पर महाराजा एक।
संसार दशा जब तक रहे, नहीं छोड़ता टेक।

77

तीन शतक सत्तावन मोती हार पिरोया जगमग ज्योति।
पंडित है वह अर्थ बतावे भोला भाला समझ न पावे।।

78

एक भूतनी हमने देखी दाहक पाचक उसका काम।
एक इन्द्री फिर भी नाशक है करे प्रगट पर को और आप।।

79

कौन शिरोमणि ऐसा है जो बैठे तो जड़ हो जाय।
पूर्ण उदय में लोकालोक निहारे अर्थ बताओ जय हो जय॥

80

एक पुरुष जिनवर ने देखा पाँव पसारे खड़ा हुआ।
कमर पे दोनों हाथ हैं उसके काल अनन्तों अड़ा हुआ॥

81

अणु अणु जिसने देखा जाना सत्य सत्य बतलाती है।
द्वादश अंगों से सजी हुई केवली कन्या कहलाती है॥

82

नव नाली जिस नगर में बहे सदा निःसार।
गली गली में गन्दगी सड़े गले दिन रात॥

83

चौपाये से जो नहीं डरता दो पाये से बचता हो।
अपने में छिपने के कारण गिरि गुफा में रहता हो॥

84

बहुरूपिया बन कर फिरे विविध स्वांग रचवाय।
कभी त्रास कभी सुख लगे भोलाराम ठगाय॥

85

चार मरे चतु उपजे अधर विराजे जाय।
अमर इन्द्र चक्री नमें चतुर्मुखी कहलाय॥

86

एक डंडा है इतना बड़ा मध्य लोक नाभि मे गड़ा।
दो दो आजू बाजू गड़े देव देवियाँ पूजा करें॥

87

वह पृथ्वी है कहाँ बताओ चौदह नदियाँ बहती हो।
पूरब पश्चिम सदा बराबर छह पर्वत की धरती हो॥

88

जैन धर्म तत्तधन साँचु कह मुखड़ा जिसका दमका हो।
मिथ्यातम के सघन निबिड़ में जुगनू बन कर चमका हो॥

89

परमेष्ठी में नाम है जिनका उमास्वामी के गुरुवर।
अमृतचन्द्र और पद्मनन्दि की नजरें जिनके चरणों पर॥

90

एक वापिका इतनी गहरी स्वर्ण रजत से बनी हुई।
मुख मंडल पर श्रीफल जिसके मालाओं से सजी हुई॥

91

चार भुजाओं का चक्कर है चार चतुष्टय बतलाये।
सम्मेदाचल अवनि तल में छिप कर भी वह इठलाये॥

92

एक सर्प ऐसा बैठा है जिसके सिर पर चाँद सितारे।
शुभ उद्घाटन वह कर्ता है दिव्यध्वनि भी उसे पुकारे॥

93

कौन है वो जो मदिरा लावे, सात और संग में हो जाये।
ग्राहक उसके अनगिनती है, हाथ जोड़ करते विनती है॥

94

जनम के जमुना पार गये।
वन में जीवन हार गये॥

95

श्वेत श्वेत है तीन शिखर, स्वर्णिम कलशें हैं जिन पर।
नेमिनाथ और श्री महावीर पद्मासन सोहे अतिधीर॥

96

जिन राजा है श्वेत चन्द्र से पुर से जय जय आई है।
चार चार ने चाँद लगाये, जनता उमड़ के आई है॥

97

तीन तीन तो तीन है, पाँच यतीश्वर राय।
पाँच नाम का एक है दो दो का समुदाय॥

98

सति शिरोमणि कौन थी सिद्धचक्र रचवाय।
जिन प्रक्षालन नीर से महाकुष्ठ मिट जाय॥

99

अवगाहन में योजनों बड़ा अन्त समन्दर रहता पड़ा।
कौन है वो धर्मात्मा या पापी भाई मेरी समझ न आती॥

100

भरा समन्दर अपरम्पार बूँद बूँद में रत्न अपार।
चन्द क्षणों में होता पार अर्थ बताए वह होशियार॥

101

दो पुत्री का पिता था वो तो इक शत इक का तात।
एक पौत्र ऐसा आया की फैल गया मिथ्यात॥

102

पहला गया तो दूजा आया यह तो अनादि का चक्कर।
सज धज कर राजा आया तो दोनों हुए रफूचक्कर॥

103
गर्भधारिणी डूँगरी झरझर झरता क्षीर।
अचरज गोपाला करे कौन वहाँ अति धीर॥

104
तीन रसों की तिथि कहावे चैत्र मास में फूल खिलाये।
चन्द्रकला गिरती अवनी पर इन्द्र का आसन कँपाये॥

105
केशरी अनुभव रस चाख्यो, मारीच गये भव हार।
चेतन ही में चित् रम्यो, किया कर्म संहार॥

106
लोहे की जंजीर में शील शिरोमणि नार।
हाथ कटोरा कलश है, बहे अश्रु जलधार॥

107
गोल गोल है भरा सरोवर, गगन में मच गया शोर।
रंगबिरंगी बारह लहरें चतुर हंस बैठे चहुँ ओर॥

108
पाँच इन्द्रियाँ मन वचन काय न आये काम।
पाँच नाम को क्या कहें, सहस्र भी अंश कहाय॥

109
तेईस सरिताएँ बही निर्मल नीर पवित्र।
विपुल हिमालय से गिरी धारा चित्र विचित्र॥

110
शुक्ल यामिनी षाढ़ की षष्ठी निशा के दृश्य।
पंचाषट सेवा करे आठ मनोहर नृत्य॥

111
अन्तर्दृष्टि निहारते देखे स्व पर चरित्र।
विविध ज्ञान आकार धर दिखता आत्म पवित्र॥

112
समकितधारी सती महान्, सिद्धचक्र का किया विधान।
गंधोदक छिडके वसुदिन, कुष्ठ रोग हो दिन दिन क्षीण॥

113
घड़ा रखा आँगन विषे, भरा नाग विकराल।
सास बहू से यूँ कहे, बेटी हार निकाल॥

114
हाथ उड़द का बाकला, जकड़ उतारे बाल।
महावीर पग धोवती, बँधन सब खुल जाय॥

115

घर से तो दई निकाली, माँ बाप सुने ना भाई।
थी साथ में सखी बसन्ती, एक पुत्र गुफा में जनती ।।

116

परपुरुष न नजर उठाई, वनवास भोग कर आई।
आज्ञा सुन कर रघुराई, जा अग्निकुण्ड समाई ।।

पहेलियों के उत्तर

1. आत्मा के अनन्त गुण
2. तीर्थंकर बालक
3. माँ के सोलह स्वप्न
4. उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल
5. भक्तामर स्तोत्र
6. मुनिराज बाहुबली
7. भरत चक्रवर्ती
8. भगवान महावीर
9. मुनिराज
10. ऋजुकुला
11. सती चन्दनबाला
12. गौतम गणधर
13. क्षीरसागर मन्दिर
14. नन्दीश्वर द्वीप के बावन जिनालय
15. भगवान आत्मा
16. अविरत सम्यक दृष्टि
17. जम्बूद्वीप स्वयम्भू
18. जीव के असाधारण भाव
19. सिद्ध परमेष्ठी
20. अभव्य जीव
21. सम्यक दृष्टि
22. मोक्ष, निगोद
23. तीन लोक
24. श्रीपाल राजा
25. जीव का ऊर्ध्वगमन
26. तीर्थंकर
27. भक्तामर
28. चक्रवर्ती
29. धवल सेठ
30. आचार्य कुन्दकुन्द
31. द्रव्यार्थिक नय
32. नामकर्म देवगति
33. जिनवाणी समझने की पद्धति
34. अन्तराय कर्म
35. निर्ग्रन्थ मुनिराज
36. णमोकार मन्त्र
37. जीव तत्व
38. विष्णुकुमार मुनि
39. पाँच भाव
40. ऐरावत हाथी
41. अरहन्त भगवान
42. हनुमान जी
43. मुनिराज आदिनाथ
44. 1. सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र,
    2. द्रव्य गुण, पर्याय,
    3. उत्पाद व्यय ध्रौव्य
45. नरकों के बिलों की संख्या
46. मिथ्यात्व के पाँच भेद
47. आचार्य परमेष्ठी
48. अरहन्त सिद्ध

49. गणधर देव
50. निज शुद्धात्मा
51. शिक्षण शिविर
52. जैन युवा फेडरेशन
53. जिनवाणी
54. सम्मेदशिखरजी
55. चारों अनुयोग
56. तत्वार्थ सूत्र के 351 सूत्र
57. मिथ्यात्व
58. सम्यक् दर्शन
59. द्रव्यमन
60. कुन्दकुन्दाचार्य
61. जिनागम
62. जम्बू द्वीप
63. तत्वार्थ सूत्र
64. पावापुर
65. छहढाला
66. टोडरमलजी
67. संसारी जीव
68. आकाश में तीन लोक
69. तीन लोक
70. पंच भाव के भेद
71. विष्णुकुमार मुनि
72. कुन्दकुन्दाचार्य
73. तीन मुक्त दो संसारी
74. अरहन्त परमेष्ठी
75. जीव तत्व
76. तेजस शरीर कार्माण शरीर
77. तत्वार्थ सूत्र
78. अग्नि
79. ज्ञान का पूर्ण उपशम पूर्ण उदय
80. तीन लोक
81. जिनवाणी
82. औदारिक शरीर
83. मुनिराज
84. पुण्य-पाप
85. अरहन्त भगवान्
86. पंचमेरू
87. जम्बूद्वीप
88. गुरुदेव
89. कुन्दकुन्दाचार्य
90. कलश
91. स्वस्तिक
92. ॐ
93. दर्शन मोहनीय कर्म
94. श्रीकृष्ण
95. चिमनगंज मंडी मंदिर
96. क्षीरसागर मन्दिर के आदिनाथ भगवान
97. पंच बाल यति
98. मैना सुन्दरी
99. स्वयम्भू रमण का मच्छ
100. भगवान आत्मा
101. राजा ऋषभदेव और मारीच

102. पुण्य पाप
103. टीले वाले महावीर
104. चेत सुदी तेरस
105. महावीर भगवान
106. सती चन्दनबाला
107. समवशरण
108. महावीर भगवान
109. दिव्यध्वनि
110. भगवान महावीर का गर्भ कल्याणक
111. केवल ज्ञान
112. मैना सुन्दरी
113. सती सोमा
114. सती चन्दनबाला
115. अंजना सती
116. सती सीता

Sankit...

11-2-19...